



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 33]
No. 33]

नई दिल्ली, सोमवार, जनवरी 28, 1985/माघ 8, 1906
NEW DELHI, MONDAY, JANUARY 28, 1985/MAGHA 8, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती हैं जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

नौवहन और परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पक्ष)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 28 जनवरी, 1985

सा० का० नि० 45(अ):—चूंकि भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908 (1908 का 15) की धारा 6 की उपधारा (2) की अपेक्षानुसार मद्रास पत्तन (बन्दरगाह यान), नियमावली, 1980 को संशोधित करने के लिए कुछ नियम भारत सरकार, नौवहन और परिवहन मंत्रालय (पत्तन पक्ष) की अधिसूचना संख्या सा० का० नि० 703 (ई) दिनांक 29 सितम्बर, 1984 के अंतर्गत 29 सितम्बर 1984 को भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग II, खण्ड 3, उप खण्ड (i) में पृष्ठ 1 से पृष्ठ 6 पर प्रकाशित हुए थे, जिसमें इससे प्रभावित होने वाले सभी व्यक्तियों से अधिसूचना के सरकारी राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख से 45 दिन की अवधि के अन्दर आपत्तियां और सुझाव आमंत्रित किए गए थे,

और चूंकि उक्त राजपत्र को 29 सितम्बर, 1984 को जन साधारण को सुलभ कराया जा चुका है,

और चूंकि जन साधारण से कोई आपत्ति अथवा सुझाव नहीं प्राप्त हुआ है,

अतः, अब केन्द्र सरकार भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908 (1908 का 15) की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात्:—

1. (1) ये नियम मद्रास पत्तन (बन्दरगाह यान) (संशोधन) नियम, 1985 कहे जाएंगे।

(2) ये सरकारी राजपत्र में अन्तिम रूप से प्रकाशन की तारीख से लागू होंगे।

2. मद्रास पत्तन (बन्दरगाह यान) नियमावली, 1980 में (क) खण्ड (क) के पहले नियम 3 में निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाए, अर्थात्:—

“(कक) ‘परिशिष्ट’ का अर्थ है इन नियमों में संलग्न परिशिष्ट,”

(ख) नियम 5 में

(i) उप-नियम (3) का खण्ड (ग) निकाल दिया जाए।

(ii) उप-नियम (4) के लिए निम्नलिखित उप-नियम प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थातः—

“(4) सभी बन्दरगाह यानों की माप भूतपूर्व मद्रास सरकार द्वारा जारी दिनांक 3 मई, 1899 की समय-समय पर यथा संशोधित जी०ओ०संख्या 384 (परिशिष्ट ग के रूप में पुनः उद्धरित) के अनुसार की जाएगी।”

(ग) नियम 14 के उप-नियम 4 के लिए निम्नलिखित उप-नियम प्रतिस्थापित किया जाए, अर्थातः—

“(4) अनुज्ञप्त बन्दरगाह यान का स्वामी अनुज्ञप्त बन्दरगाह यान में लादे गए माल को हुई पूर्ण अथवा आंशिक हानि, यदि कोई हो, के संबंध में किसी संभावित दावे को भी पूरा करेगा, जब तक कि अनुज्ञप्त बन्दरगाह यान में लादे गए माल को हुई ऐसी हानि अथवा नुकसान के संबंध में पंजीयक अधिकारी अथवा उसके द्वारा प्राधिकृत अन्य अधिकारी द्वारा की गई जांच के आधार पर यह साबित न हो गया हो कि यह सीरंग अथवा सूखानी अथवा टिण्डल जिन्होंने कि उक्त बन्दरगाह यान का संचालन किया था, के नियंत्रण से बाहर की परिस्थितियों के कारण हुआ है।”

(घ) नियम 34 में “इस संबंध में सुसंगत नियमों” शब्दों के लिए “भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908, अन्तर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 अथवा व्यापार नौवहन अधिनियम, 1958 के अन्तर्गत बनाए गए नियमों” शब्दों को प्रतिस्थापित किया जाएगा,

(ङ) नियम 35 में (1) “इस संबंध में सुसंगत नियमों” शब्दों के लिए “भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908, अन्तर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 अथवा व्यापार नौवहन अधिनियम, 1958 के अन्तर्गत बनाए गए नियमों” शब्द प्रतिस्थापित किये जाएंगे,

(ii) टिप्पण में पैराग्राफ (2) हटा दिया जाए, तथा पैराग्राफ (3) और (4) को पैराग्राफ (2) और (3) के रूप में पुनः संख्यांकित किया जाएगा,

(च) परिशिष्ट ख के पश्चात् निम्नलिखित अनुबंध जोड़ा जाएगा, अर्थातः—

परिशिष्ट “ग”

[नियम 5(क) देखें]

मद्रास सरकार (1899)

समुद्री

प्राप्त किया }
पंजीकृत } 1899

संलग्नक
अतिरिक्त
प्रतियां

जी०ओ०संख्या 384, 3 मई, 1899

मई

देशी यानों की माप

वर्तमान में लागू नियमों का अधिक्रमण करते हुए मद्रास प्रेजिडेंसी के अनेक पत्तनों में अपनाए जाने वाले तथा लागू किए जाने वाले के लिए कुछ विशेष नियमों का निर्धारण करने वाली अधिसूचना को फोर्ट सेंट जार्ज और सभी समुद्री जिला राजपत्तों में प्रकाशित करने का आदेश दिया जाता है।

मद्रास सरकार

समुद्री विभाग

निम्नलिखित कागजातों को पढ़ें :—

प्रेजिडेंसी पोर्ट आफिसर, मद्रास से दिनांक 2-3-1899,

सं० 337/80 जी

प्रेजिडेंसी पोर्ट आफिसर मद्रास से दिनांक 29-3-1899

सं० 337/123 जी

आदेशः—दिनांक 3-5-1899, संख्या 384

आदेश दिया जाता है कि निम्नलिखित अधिसूचना पोर्ट सेंट जार्ज तथा सभी समुद्री जिला राजपत्तों में प्रकाशित की जाए—

अधिसूचना

1850 के अधिनियम 11 (1841 के अधिनियम 10, जो कि जहाजों के रेजिस्ट्रेशन से संबंधित है, को संशोधन करने वाला अधिनियम) के भाग 3 की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत महामहिम राज्यपाल तथा उनकी परिषद निर्देश देते हैं कि वर्तमान में लागू नियमों का अधिक्रमण करते हुए मद्रास प्रेजिडेंसी के अनेक पत्तनों में देशी जलयानों के माप के लिए निम्नलिखित विशेष नियम अपनाए जाएं तथा लागू किए जाएं।

खुली नौकाओं को छोड़कर अन्य देशी जलयानों के माप के लिए नियम।

स्टेम के पिछले भाग से स्टर्न-पोस्ट के अगले भाग तक डैक के साथ-साथ लंबाई मापें ।

द्वितीय— चौड़ाई सबसे अधिक चौड़े भाग से भीतरी या बाहर की लकड़ी या लोहे तक

तृतीय— गहराई नीचे पम्प-वेल से स्किन तक टनेज डांक के अंतर्गत ।

हल—

इन तीनों परिधियों का एक-साथ गुणा करें तथा गुणनफल को 130 से भाग दें तथा भागफल ऐसे जलयानों के हल का टनेज होगा ।

यदि जलयान में धूप अथवा अन्य तंग स्थान हो तो उसके ऐसे भाग चाहे वह घिरा हुआ हो और जो बल्क-हैडज में शामिल हो, के अन्दर की लंबाई, चौड़ाई तथा ऊंचाई मापें ।

धूप अथवा अन्य तंग स्थान अधिक बल्कहैड के अन्दर है अथवा नहीं

इन तीनों मापों का एक साथ गुणा करके तथा गुणनफल को 92.4 से भाग करने पर भागफल टनों की वह संख्या होगी जो कि ऐसे जलयान के हल की टन संख्या में जोड़ी जानी है ।

टिप्पणी:— चौड़ाई मापने में अन्दर की प्लेनकिंग की भीतरी तरफ की स्किन और यदि किसी नौका अथवा जलयान में अन्दर की प्लेनकिंग न हो तो टिम्बरों की भीतरी भाग के ऊपर अथवा उसके सामने लगाई गई पतली बैटन अन्दरूनी स्किन को दर्शाएगा और गहराई मापने में टिम्बर का फर्श या उसे अभाव में केनसन का उपरी भाग स्किन को दर्शाएगा

II

खुली नौकाओं के रूप में देशी यान के माप के लिए नियम

लम्बाई:—जलयान के कील की लम्बाई को अन्दर से स्कैप में सही स्थान जहाँ कि स्टेम तथा स्टर्न पोस्ट इससे जुड़े हुए हैं, य मापा जाए ।

जलयान के अन्दर की तरफ कील के ऊपरी सिरे के बीच का चिन्ह जो कि स्टेम तथा स्कैप्स के समान दूरी पर है “केन्द्र” कहा जायेगा ।

चौड़ाई :—“केन्द्र” में जलयान की बाहरी लैकिंग के अन्दरूनी भाग के पक्ष से पक्ष तक की गनवेल दूरी के नीचे के निकटतम भाग से मापें ।

गहराई:—ऊपरी किनारे के एमिडशिप से अथवा फ्लोर टिम्बर की चोटी पर अथवा “केन्द्र” से कम से कम दूरी पर से जलयान के मुख्य रूप से लगाए गए बीम के ऊपरी किनारे के स्तर तक ऊंचाई मापें ।

पुनः ऊपरी किनारे एमिडशिप से अथवा फ्लोर टिम्बर की चोटी पर अथवा “मध्य” से कम से कम दूरी पर से ऊपरी गनवेल के पार तथा उस पर टिकाए गए सीधे किनारे के बैटन के अन्दर की तरफ ऊंचाई मापें अथवा जलयान के सबसे ऊँचे सट्रैक चाहे अस्थायी हो या अन्यथा की चोटी पर से ऊंचाई मापें ।

गहराई के इन दोनों मापों को इकट्ठा जमा करें तथा 2 से भाग दें और यह टनेज की गणना के लिए प्रयुक्त की गई मध्य गहराई है ।

लम्बाई :—क से ख तक दिखाई गई डोटिड रेखा अनुमानतः 47 फुट ग “मध्य” स्कैप के स्थान जहाँ स्टेम सटर्न-पोस्ट कील को जोड़ते हैं, से लम्बों के बीच अनुमानतः 23'-5

चौड़ाई :—बाहरी लोकिंग के अन्दरूनी भाग से ड से च तक की डोटिड रेखा अर्थात् 16 फीट ।

गहराई :—(1) मध्य में फ्लोर टिम्बर के ऊपरी किनारे ग से रेखा लगाए गए मुख्य बीम का ऊपरी किनारा ग से घ अनुमानतः 6 फुट ।

(2) फ्लोर टिम्बर के ऊपरी किनारे से गनवेलज अथवा ऊपरी स्ट्रैक्स के पार डाली गई बैटन छ की निचली रिफ तक ग से छ तक डोटिड रेखा अनुमानतः 11 फुट, छ जमा ग घ को 2 से विभाजित किया = टनेज के लिए मीन गहराई

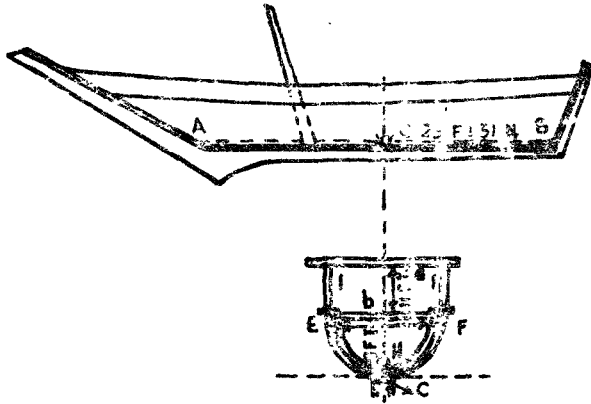
अथवा मान लो 6' जमा 11' = 17 जिसे 2 से भाग किया = 8.5 फुट

नियम: लम्बाई को चौड़ाई से गुणा करें और फिर गुणनफल को गहराई से गुणा करें तथा टनेज के लिए 100 से भाग दें ।

उदाहरण:

पहली गहराई	6 फुट	लम्बाई	47
दूसरी गहराई	11 फुट	चौड़ाई	16
	17 फुट		282
			47
(2) —8.5 गणना के लिए मध्य			752
			8.5
			3760
			6016

63 $\frac{92}{100}$ टन = 63. 92. 0



किसी देशी जलयान चाहे वह रुका हो या खुले जल में हो का माप या पुनः माप लेने में उसकी रजिस्टर की गई टनेज का निश्चय करने के प्रयोजन के लिए टनेज के माप में शामिल किए गए स्थान में से निम्नलिखित कटौतियां की जाएंगी :—

- (क) केवल मास्टर के आवास के लिए प्रयोग किया गया स्थान, तथा नाविकों या प्रशिक्षुओं द्वारा अधिग्रहण किया गया स्थान जो कि उनके उपयोग के लिए व्यापारिक जहाजरानी अधिनियम 1894 की छठी अनुसूची के अनुसार उचित प्रमाणित किया गया हो।
- (ख) केवल हेलम कैपस्टन तथा एन्वर गियर के कार्यचालन अथवा पार्टी सिगनलों और नौपरिवहन के दूसरे उपकरणों तथा बोट्स वेनस स्टोर्स को रखने के लिए प्रयोग किया गया स्थान।
- (ग) अलग से रखा गया कोई स्थान जो केवल सेलज का भण्डारण करने के लिए प्रयोग किया गया हो।

टिप्पणी :—नाविक अथवा प्रशिक्षुओं द्वारा अधिग्रहण किए गए स्थान तथा पूर्वोक्त के अनुसार प्रमाणित की गई कटौती को छोड़कर ऊपर स्वीकृत की गई कटौती निम्नलिखित व्यवस्थाओं की शर्त के अधीन होगी, अर्थात्

- (i) जिस अपेक्षित प्रयोजन के लिए सीमा में रहते हुए और व्यवस्थित ढंग से तथा दक्षतःपूर्वक निर्माण किए जाने के लिए स्थान की कटौती की गई है उसके बारे में यान-सर्वेक्षक द्वारा उचित प्रमाण-पत्र दिया जाए।
- (ii) ऐसे प्रत्येक स्थान के अन्दर या बाहर स्थायी रूप से चिह्नित सूचना अवश्य दी जाए कि किस प्रयोजन के लिए इसे लागू किया जाना है तथा इस प्रकार से लागू किए जाने पर इसे जहाज के टनेज में से कम कर दिया जाएगा।
- (iii) सेलज के भण्डारण के लिए स्थान के कारण की जाने वाली कटौती जहाज के टनेज के 2.5 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(iv) योरोप में बने जलयानों का माप करने में सर्वेक्षक पूर्ण रूप से व्यापारिक जहाजरानी अधिनियम, 1894 की व्यवस्थाओं द्वारा मार्ग निर्देश ग्रहण करेंगे।

2. प्रेजिडेंसी पोर्ट ऑफिसर एक वर्ष के परीक्षण के बाद नए नियमों के प्रभाव के बारे में सूचित करेंगे।

टिप्पणी :—मूल नियम, नौवहन और परिवहन मंत्रालय की सरकारी अधिसूचना संख्या सांकांनि० 631, दिनांक 29 मई, 1984 के अन्तर्गत भारत के राजपत्र, भाग 2, खण्ड 3 (i) में दिनांक 28 मई 1980 की पृष्ठ 1314 से पृष्ठ 1321 पर प्रकाशित किए गए थे।

[सं. पी० डब्ल्यू/पी०जी०एल-34/80]

पी० वी० राव, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF SHIPPING & TRANSPORT

(Ports Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 28th Jan., 1985

G.S.R. 45(E):—Whereas the draft of certain rules to amend the Madras Port (Harbour Craft) Rules, 1980 was published as required by sub-section (2) of section 6 of the Indian Ports Act, 1908 (15 of 1908) at pages 1-6 of the Gazette of India, Extraordinary, Part II section 3, sub-section (i), dated the 29th September, 1984 under the Notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Ports Wing) No. G.S.R. 703(E), dated the 29th September, 1984 inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby till the expiry of a period of 45 days from the date of publication of the notification in the Official Gazette;

And whereas said Gazette was made available to the public on 29th September, 1984;

And whereas no objection or suggestion was received from the public;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 6 of the Indian Ports Act, 1908 (15 of 1908), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. (1) These rules may be called the Madras Port (Harbour Craft) (Amendment) Rules, 1985.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
2. In the Madras Port (Harbour Craft) Rules, 1980,
 - (a) in rule 3, before clause (a), the following clause shall be substituted, namely :—

“(aa) ‘Appendix’ means Appendix attached to these rules.”;
 - (b) in rule 5,—
 - (i) in sub-rule (3), clause (c) shall be omitted.
 - (ii) for sub-rule (4), the following sub-rule shall be substituted, namely :—

“(4) all harbour crafts shall be measured in accordance with G.O. No. 384, Marine, dated the 3rd May, 1899, issued by the erstwhile Government of Madras, (reproduced as Appendix C) as amended from time to time”;

- (c) in rule 14, for sub-rule (4), the following sub-rule shall be substituted, namely :—

“(4) The owner of the licensed harbour craft shall also meet any possible claim for the value of the goods that have been loaded in the licensed harbour craft and which have sustained loss or damage, if any, in full or in part unless such loss or damage sustained by the cargo loaded in the licensed harbour craft is proved to have taken place due to the circumstances beyond the control of the Syrang or Sukhany or Tindal who have manned the said harbour craft based on an inquiry conducted in this behalf by the Registering Officer or any officer authorised by him.”;

- (d) in rule 34, for the words “the relevant rules in this behalf” the words “the rules framed under the Indian Ports Act, 1908, the Inland Steam Vessels Act, 1917, or the Merchant Shipping Act, 1958” shall be substituted;

- (e) in rule 35,—

(i) for the words “the relevant rules in this behalf” the words “the rules framed under the Indian Ports Act, 1908, the Inland Steam Vessels Act, 1917 or the Merchant Shipping Act, 1958” shall be substituted;

(ii) in Note, paragraph (2) shall be omitted; and paragraphs (3) and (4) shall be renumbered as paragraphs (2) and (3);

- (f) after Appendix B, the following Appendix shall be added, namely:—

APPENDIX 'C'

[See Rule 5(a)]

GOVERNMENT (1899) OF MADRAS MARINE

Recd. }	1899	Enclosures
Regd. }		Spare Copies

G.O. No. 384, 3rd May, 1899

MAY

Measurement of Native Craft

Ordering, with remark, the publication, in the Fort St. George, and all Maritime District Gazettes, of the notification laying down certain special rules for the to be adopted and enforced at the several ports of the Madras Presidency in supersession of the rules now in force.

GOVERNMENT OF MADRAS MARINE DEPARTMENT

Read - the following papers:—

From the Presidency Port Officer, Madras dt. 2-3-1899

From the Presidency Port Officer, Madras No. 337/80G.
dt. 29-3-1899
No. 337/123G.

ORDER-No. 384, Marine dt. 3-5-1899

Ordered that the following notification be published in the Fort St. George and all Maritime District Gazettes :—

NOTIFICATION

Under the provisions of Section 3 of Act XI of 1850 (An Act to amend Act X of 1841 which relates to the registration of

1465 GI/84—2

ships) His Excellency the Governor in Council directs that the following special rules for the measurement of native craft be adopted and enforced at the several ports of the Madras Presidency in supersession of the rules now in force.

Rules for the measurement of native craft other than open boats.

Measure the length along the deck from the after part of the stem to the fore part of the stern-post

Secondly—The broadest from the broadest part from skin to skin.

Thirdly—The depth from under the tonnage dock down the pump-well to skin.

Hull

Multiply these three dimensions together and divide the product by 130, and the quotient will be the tonnage of hull of such vessel.

If the vessel have a poop or other closed in space, measure the inside length, breadth, and height of such part thereof as may be included within the bulkheads, whether enclosed.

Poop or other closed in space. Within foremost bulkhead or not.

Multiply these three measurements together, and dividing the product by 92.4 the quotient will be the number of tons to be added to the tonnage of hull of such vessel.

Note:—In measuring breadth, the skin in the inner side of the inner planking, and if a boat, or vessel has not inner planking, a thin batten laid on or against the inner side of the timbers would represent the inner skin, and in measuring depth the floor timber or, in its absence, the upper part of the keelson shall represent the skin.

Rules for the measurement of native craft being open boats.

Length—Measure the length of the keel of the vessel inside from the exact point in the scrap where the stem and stern-post are joined to it.

Mark on the middle of the upper edge of the keel inside the vessel a point equidistant from the stem and stern scraps to be called the “Centre”.

Breadth—At the “Centre” measure across close up underneath the gunwale the distance from side to side of the inner faces of the outer planking of the vessel.

Depth—From amidships of the upper edge or top of the floor timber at or nearest the “centre” measure the height to the level of the upper side of the main fixed beam of the vessel.

Again from amidships of the upper edge or top of the floor timber at or nearest to the “Centre” measure the height to the underside of a straight-edged batten placed across and resting on the upper gunwales, or on the top of the highest strake, temporary or otherwise, of the vessel.

Add both these depth measurements together, and divide by 2, which is the mean depth to be used for calculating the tonnage.

Length—Shown be dotted lines from A to B, say 47 ft., C the “Centre”; between perpendiculars, say 23'-5 from the point in the scraps where the stem and stern-post join the keel.

Breadth—Dotted lines from E to F inner faces of the outer planking, say 16 feet,

Depth—(1) line from C upper edge of floor timber at the centre, C to D upper edge of main fixed beam, say 6 feet.

(2) Dotted line from C to G from upper edge of floor timber to under side of battens G laid across gunwales or upper, strakes, say 11 feet, i.e.,

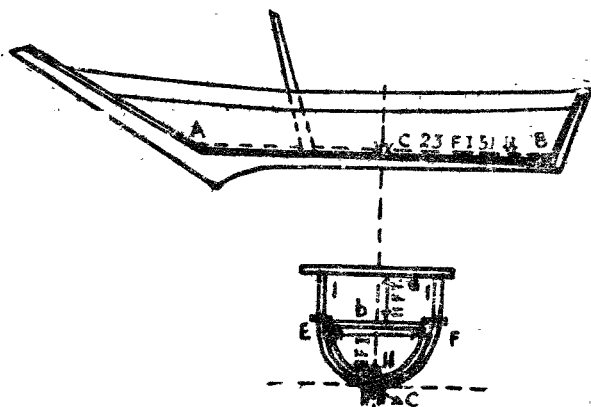
GG plus CD divided by 2 = mean depth for tonnage

or say 6' plus 11' = 17' divided by 2 = 8.5 ft. do—.

Rules: Multiply the length by the breadth, and then the product by the depth, and divide by 100 for the tonnage.

Example :

1st depth	6 ft.	Length	47
2nd depth	11 ft.	Breadth	16
(2)	17		282
			47
			752
	8.5 mean for calculating		8.5
			3760
			6016
	92		
63	100	tons	= 63.92.0



In measuring or re-measuring a native craft, whether decked or open for the purpose of ascertaining her registered tonnage,

the following deductions shall be made from the space included in the measurement of the tonnage, namely :—

(a) Any space used exclusively for the accommodation of the master; and any space occupied by seamen or apprentices and appropriated to their use, which is so certified—vide 6th Schedule to the Merchant Shipping Act, 1894.

(b) Any space used exclusively for the working of the helm, the Capstan, and the anchor gear, or for keeping the charts, signals and other instruments of navigation, and boatswains stores.

(c) Any space set apart and used exclusively for the storage sails.

Note:— The deductions above allowed, other than a deduction for a space occupied by seamen or apprentices, and certified as aforesaid, shall be subject to the following provisions, namely :

(i) The space deducted must be certified by a surveyor of ships as reasonable in extent and properly and efficiently constructed for the purpose for which it is intended.

(ii) There must be permanently marked in or over every such space a notice stating the purpose to which it is to be applied, and that whilst so applied it is to be deducted from the tonnage of the ship.

(iii) The deduction on account of space for storage of sails must not exceed 2-1/2 % of the tonnage, of the ship.

IV

In the measurement of vessels of European build, surveyors will be guided solely by the provisions of the Merchant Shipping Act, 1894.

2. The effect of the new rules will be reported on by the Presidency Port Officer after a year's trial.

Note: The principal rules were published in the Gazette of India, Part 2, Section 3(i), dated 28th May, 1980 at pages 1314-1321 vide Government notification, Ministry of Shipping and Transport, No. GSR 631, dated 29th May, 1980.

[No. PW/PGL-34/80]

P.V. Rao, Jt. Secy.